एक सिद्ध के सान्निध्य में

बाबा मुक्तानन्द से जुड़े संस्मरण

२

***

सन् १९७८ में, मैं ओकलैण्ड में स्थित सिद्धयोग आश्रम में, स्टाफ़ सदस्य के रूप में सेवा अर्पित करने गई। कुछ ही माह पश्चात्, बाबा जी अपनी तीसरी और अन्तिम विश्वयात्रा पर वहाँ पधारे। अपने जीवन के उस समय, मुझे अन्तर-शक्ति का अनुभव कभी-कभार और बहुत सूक्ष्म रूप से होता। अतः मैंने बाबा जी से प्रार्थना की कि शक्ति का मेरा अनुभव और प्रबल हो।

बाबा जी के आगमन के कुछ ही समय बाद, मैंने दर्शन-सहायिका के रूप में सेवा करनी आरम्भ की। हर शाम को सत्संग के दौरान मैं बाबा जी के समीप बैठा करती। जब लोग दर्शन के लिए आते तो बाबा जी अपने हाथ में लिए मोरपंखों से उन्हें आशीर्वाद देते। मेरी सेवा होती, दर्शन-पात्र की ओर ध्यान देना। लोग जब दर्शन में आते तो वे जो कुछ अर्पित करते उससे दर्शन-पात्र भरता जाता और मैं भरे हुए उन पात्रों को वहाँ से ले जाती। हर बार जब मैं वहाँ से दर्शन-पात्र उठाती, बाबा जी के मोरपंखों का मुझे स्पर्श होता।

जैसे-जैसे मैं हर शाम को सेवा अर्पित करती गई, अन्तर-शक्ति का मेरा अनुभव अधिकाधिक प्रबल होता गया। मुझे महसूस होने लगा कि मेरा शरीर बहुत गर्म हो रहा है। मैं महसूस कर सकती थी कि शक्ति मेरे अन्दर ऊपर की ओर उठ रही है और सिर में अत्यन्त तीव्रता से व्याप्त हो रही है। यह अनुभव बहुत स्पष्ट व ठोस था। कुछ ही महीनों में शक्ति का मेरा अनुभव जो सूक्ष्म था, अब एक दहकती अग्नि बन गया।

मैं अब देख पाती हूँ कि बाबा जी ने मुझे दिव्य शक्ति के साथ एक स्थायी सम्पर्क प्रदान किया था—ऐसा सम्पर्क जो आजीवन मेरे साथ रहेगा। आज भी, अन्तर-शक्ति का मेरा अनुभव अधिकाधिक गहरा

हो रहा है। बाबा जी और गुरुमाई जी आज भी मेरी प्रार्थनाएँ सुनते हैं। श्रीगुरु की असीम उदारता को देख, मैं विनम्रता से भर उठी हूँ।

कैलीफ़ोर्निया, यू. एस. ए. से एक सिद्धयोगी

***

सन् १९७८ में, बाबा मुक्तानन्द की तीसरी विश्वयात्रा के आरम्भ में मॅलबोर्न में हुए एक शक्तिपात ध्यान-शिविर में मैं और मेरे पति बाबा जी से मिले। वह हमारे लिए एक शक्तिपूरित और जीवन-रूपान्तरणकारी समय था। ऑस्ट्रेलिया से बाबा जी के प्रस्थान के समय, हमें अन्य सिद्धयोगियों के साथ मिलकर, हवाई अड्डे पर बाबा जी को विदाई देने के लिए आमन्त्रित किया गया। हम सब हवाई अड्डे के लाउंज में एकत्रित होकर ज़मीन पर बैठ गए; बाबा जी हमसे बात कर रहे थे और हमारे साथ हँसी-मज़ाक कर रहे थे और हमें ध्यान करने, परिश्रम करने और एक उत्तम जीवन जीने का स्मरण करा रहे थे।

बाबा जी प्रसादरूप में, मुट्ठी भर-भरकर चॉकलेट पूरे कमरे में फेंक रहे थे; सारा वातावरण मीठी हँसी व खिलखिलाहट से और प्रेम से भर गया था। आख़िरकार हमें बताया गया कि बाबा जी की उड़ान का समय हो गया है और अब हमें वहाँ से जाना होगा।

जब सभी लोग उठकर पीछे के दरवाज़े की ओर चल पड़े, मुझे एक आख़िरी बार बाबा जी के पास जाने का खिंचाव महसूस हुआ। सबके बाहर जाने के उपरान्त, बाबा जी शान्त बैठे थे। मैं आगे बढ़ी और जाकर बाबा जी के चरणों में बैठ गई। बाबा जी के चारों ओर एक गहन प्रशान्ति व्याप्त थी। मेरी आँखें धीरे-से बन्द हो गईं और मैं उस ध्यानशील शान्ति में तल्लीन होकर बैठी रही।

हालाँकि वह अनुभव कुछ ही अनमोल मिनटों के लिए रहा होगा, किन्तु उसका मुझ पर गहरा प्रभाव पड़ता रहा। उसके बाद के महीनों व वर्षों में, जब भी मैं ध्यान के लिए बैठती, मैं बाबा जी के सान्निध्य की प्रशान्ति व स्थिरता का स्मरण करती। फिर, उस स्मृति को श्वास में भरते हुए, मैं बड़ी सहजता से गहरे ध्यान में उतर जाती।

सन् १९८६ में गुरुमाई जी से मिलने तक मैं इसी रीति से ध्यान करती रही। उनके सान्निध्य में भी मैंने उसी गहन स्थिरता, प्रशान्ति व प्रेम का अनुभव किया। इस अद्भुत पथ पर, गुरुध्यान करना मेरा स्थायी सहचर रहा है।

बॅसेल्टॅन, ऑस्ट्रेलिया से एक सिद्धयोगी

***

सन् १९७६ में, मेरे जन्मदिन के उपहार-स्वरूप, मेरी बहन ने मुझे एक शक्तिपात ध्यान-शिविर में भाग लेने के लिए आमन्त्रित किया। एक वैज्ञानिक होने के कारण, आध्यात्मिकता को लेकर मैं कुछ सन्देहपूर्ण थी किन्तु साथ ही मैं उत्सुक भी थी; इसलिए मैंने ध्यान-शिविर में भाग लेने का निर्णय लिया। प्रथम सत्र में हमने 'ॐ नमः शिवाय' मन्त्र-धुन की, और फिर हमने ध्यान करना आरम्भ किया। मुझे बाबा जी के मोरपंख की शशश . . . शशश . . . आवाज़ सुनाई दे रही थी; वे हॉल में बैठे लोगों के बीच चल रहे थे। जब बाबा जी मेरे पास आए तो मुझे अपने सिर पर मोरपंख का स्पर्श महसूस हुआ, और साथ ही हिना इत्र की मधुर सुगन्ध भी। फिर मैंने महसूस किया कि बाबा जी ने अपने अँगूठे और तर्जनी से मेरी भृकुटि को दबाया है।

उस क्षण मुझे हल्का-सा करण्ट जैसा महसूस हुआ, जैसे हल्की-सी बिजली बाबा जी के हाथ से निकलकर मेरे सीने के मध्य तक दौड़ गई हो। मुझे एक मीठी-सी ऊर्जा की अनुभूति होने लगी जो मेरे हृदय से प्रसरित होकर मेरे सम्पूर्ण शरीर में व्याप्त हो रही थी। यदि मुझे उसके रंग का वर्णन करना हो तो मैं कहूँगी, वह स्वर्णिम थी। वह शक्ति अत्यन्त प्रबल, फिर भी सूक्ष्म थी; इसके पहले मैंने कभी ऐसी शक्ति अनुभव नहीं की थी— वह प्रेम व खुशी से भरी हुई थी। मेरे अन्तर के किसी गहरे स्थान से ये शब्द उभरे, "मैं अपने घर आ गई हूँ, मैं अपने घर आ गई हूँ। मेरा हृदय, मेरा घर है।"

शक्तिपात ध्यान-शिविर के बाद घर लौटने के पश्चात्, अगली प्रातः मैं अपने आप ही सुबह ५ बजे जाग गई और ध्यान करने का निश्चय किया। तब से मैंने इस अभ्यास को जारी रखा है।

बाबा जी ने जिस शक्ति को मेरे अन्तर में जाग्रत किया था, उसके स्वरूप को बेहतर समझने के लिए मैंने प्रत्यभिज्ञाहृदयम् जैसे शास्त्रों का अध्ययन करना आरम्भ किया जिनका परिचय बाबा जी ने हमें दिया था। मैंने चिति के स्वरूप के बारे में पढ़ा और यह कि किस प्रकार चिति विश्व के रूप में प्रकट होती है। इन शास्त्रों के अध्ययन ने मुझे अपने ध्यान के अनुभवों को अपनी विज्ञान की समझ के साथ जोड़ने में मदद की। बाबा जी ने जो अनुभव मुझे दिया और जो आध्यात्मिक सिखावनियाँ उन्होंने प्रदान कीं, उसी के फलस्वरूप आज मैं अपने बोध को और भौतिक जगत को एक ही चिति के अंश के रूप में देख पाती हूँ।

ऑरेगन, यू.एस. ए. से एक सिद्धयोगी

***

© २०१७ एस.वाय.डी.ए. फ़ाउन्डेशन ®। सर्वाधिकार सुरक्षित।